सर्वेश्वर दयाल सक्सैना

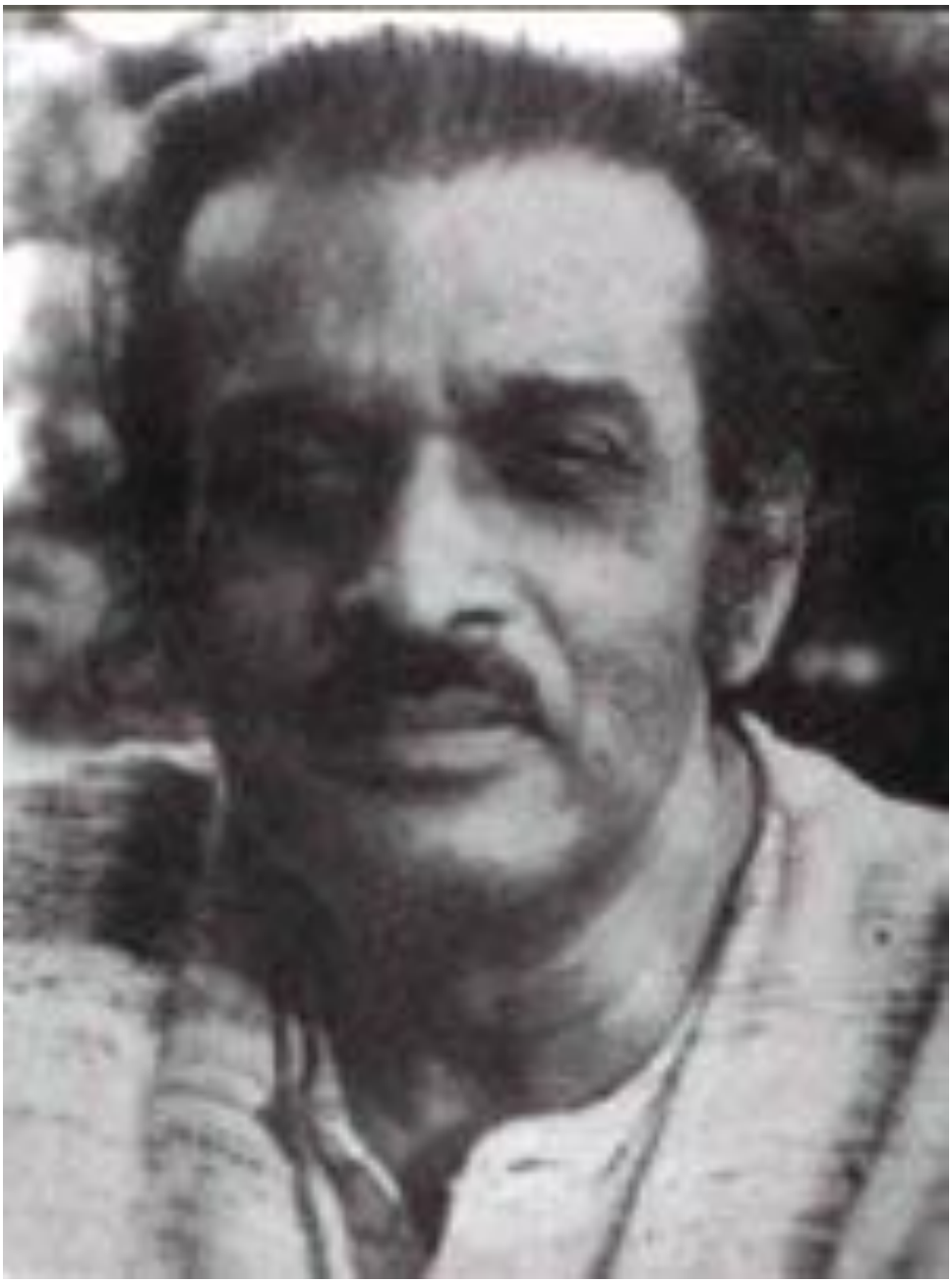

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (15 सितंबर 1927 - 23 सितंबर 1983) एक हिंदी लेखक, कवि, स्तंभकार और नाटककार थे। वे उन सात कवियों में से एक थे, जिनकी रचनाएँ पहली बार " तार सप्तक " में प्रकाशित हुईं, जिसने 'प्रयोगवाद' (प्रयोगवाद) युग की शुरुआत की, जो आगे चलकर "नई कविता" आंदोलन बन गया। [1]

जीवनी

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म 15 सितंबर 1927 को उत्तर प्रदेश के बस्ती शहर में हुआ था, उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की । [२] आज वे एक बहुत ही महत्वपूर्ण राजनीतिक कवि माने जाते हैं। उन्होंने अपने कविता संग्रह, *खूटियों पर तांगे लोग* ("खूंटे से लटके लोग") के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता । [*उद्धरण वांछित*] उनकी लघु कहानी, *बकरी ("बलि का बकरा"), को* एम.एस. सथ्यू द्वारा कन्नड़ में 'कुरी.कॉम' के रूप में रूपांतरित किया गया है , इसे आपातकालीन काल (१९७५-७७) से शुरू करके संशोधित रूपांतरों के साथ, वर्ष में कई बार मंचित किया गया है , जब इसका इस्तेमाल राजनीतिक व्यंग्य के रूप में किया गया था, इसे लोक नाटक के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। उनके अन्य उल्लेखनीय नाटक हैं, *लाख की नाक* , *हवालात* और *भौं भौं* खौं सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने *मुक्ति की आकांक्षा* भी लिखी थी जो उनके समय में स्वतंत्रता की आवश्यकता को दर्शाती है। उनकी एक कविता को सिद्धार्थ प्रताप सिंह ने एनिमेशन शॉर्ट में बदल दिया है, जिसका शीर्षक है *अपनी बिटिया के लिए एक कविता* । उन्होंने 'शाम एक किशन' भी लिखा। उन्होंने कई बच्चों की कविताएँ भी लिखीं जिनमें से *इब्न बतूता का जूता* सबसे लोकप्रिय है। उन्होंने बच्चों की पत्रिका *पराग का* संपादन किया ।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की साहित्यिक रचनाएँ

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी (Sarveshwar Dayal Saxena) ने आधुनिक हिंदी साहित्य की कई विधाओं में साहित्य का सृजन किया वहीं उनकी कई रचनाओं का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका हैं। यहाँ सर्वेश्वर जी की संपूर्ण साहित्यिक रचनाओं के बारे में बताया जा रहा है, जो कि इस प्रकार हैं:-

कविता संग्रह

- काठ की घंटियाँ
- बाँस का पुल
- एक सूनी नाव
- गर्म हवाएँ
- कुआनो नदी
- जंगल का दर्द
- खूँटियों पर टँगे लोग
- क्या कह कर पुकारूँ
- कोई मेरे साथ चले

उपन्यास

- सूने चौखटे
- पागल कुत्तों का मसीहा
- सोया हुआ जल

नाटक

- बकरी – वर्ष 1974
- लड़ाई – वर्ष 1979
- अब ग़रीबी हटाओ – वर्ष 1981

एकांकी

- कल भात आएगा
- हवालात
- रूपमती बाज बहादुर
- होरी धूम मचोरी

बाल नाटक

- भों-भों खों-खों
- लाख की नाक
- अनाप-शनाप
- हाथी की पों
- लाख की नाक

बाल कविताएँ

- बतूता का जूता
- महँगू की टाई
- बिल्ली के बच्चे
- नन्हा ध्रुवतारा

यात्रा संस्मरण

- कुछ रंग कुछ गंध

अनुवाद

- सोवियत कथा संग्रह

संपादन

- समशेर की कविताएँ
- नेपाली कविताएँ

निबंध संग्रह

- चरचे और चरखे

यह भी पढ़ें – नई कहानी आंदोलन के विख्यात लेखक मोहन राकेश का संपूर्ण जीवन परिचय

पुरस्कार एवं सम्मान

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी को आधुनिक हिंदी साहित्य में विशेष योगदान देने के लिए कई पुरस्कारों व सम्मान से पुरस्कृत किया जा चुका है, जो कि इस प्रकार हैं:-

- सर्वेश्वर जी को '**जंगल का दर्द' (**काव्य संग्रह) के लिए उत्तर प्रदेश संस्थान द्वारा **'स्तरीय पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया था।
- '**जंगल का दर्द' (**काव्य संग्रह) के लिए लिए उन्हें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा **'तुलसी पुरस्कार'** से नवाजा गया था।
- **'खूँटियों पर टँगे लोग' (**काव्य संग्रह) के लिए लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा '**साहित्य अकादमी पुरस्कार'** से पुरस्कृत किया गया था।

यह भी पढ़ें – भारतीय रंगमंच के प्रसिद्ध रंगकर्मी 'हबीब तनवीर' का संपूर्ण जीवन परिचय

निधन

जब सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी बाल-पत्रिका '**पराग'** का संपादन कार्य कर रहे थे उसी दौरान वह मधुमेय रोग से पीड़ित हो गए थे। किंतु उन्होंने अपना संपादन कार्य जारी रखा लेकिन दिल का दौरा पड़ने से उनका 23 सितंबर 1983 को निधन हो गया। इसे एक संयोग की कहा जा सकता है कि जिस माह उनका जन्म हुआ उसी वर्ष उन्होंने

दुनिया को सदा के लिए अलविदा कह दिया। किंतु हिंदी साहित्य में उनकी अनुपम रचनाओं के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा।